



Mr.

20 Jan 2002

04:25 PM

Yamunanagar

Model: All-Dosha-Report

Order No: 121502401

## सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग \_\_\_\_\_: पुल्लिंग  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_: 20/01/2002  
दिन \_\_\_\_\_: रविवार  
जन्म समय \_\_\_\_\_: 16:25:00 घंटे  
इष्ट \_\_\_\_\_: 22:50:07 घटी  
स्थान \_\_\_\_\_: Yamunanagar  
राज्य \_\_\_\_\_: Haryana  
देश \_\_\_\_\_: India

अक्षांश \_\_\_\_\_: 30:07:00 उत्तर  
रेखांश \_\_\_\_\_: 77:18:00 पूर्व  
मध्य रेखांश \_\_\_\_\_: 82:30:00 पूर्व  
स्थानिक संस्कार \_\_\_\_\_: -00:20:48 घंटे  
ग्रीष्म संस्कार \_\_\_\_\_: 00:00:00 घंटे  
स्थानिक समय \_\_\_\_\_: 16:04:12 घंटे  
वेलान्तर \_\_\_\_\_: -00:10:57 घंटे  
साम्पातिक काल \_\_\_\_\_: 00:02:48 घंटे  
सूर्योदय \_\_\_\_\_: 07:16:57 घंटे  
सूर्यास्त \_\_\_\_\_: 17:46:53 घंटे  
दिनमान \_\_\_\_\_: 10:29:57 घंटे  
सूर्य स्थिति(अयन) \_\_\_\_\_: उत्तरायण  
सूर्य स्थिति(गोल) \_\_\_\_\_: दक्षिण  
ऋतु \_\_\_\_\_: शिशिर  
सूर्य के अंश \_\_\_\_\_: 06:19:33 मकर  
लग्न के अंश \_\_\_\_\_: 19:43:07 मिथुन

#### अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति \_\_\_\_\_: मिथुन - बुध  
राशि-स्वामी \_\_\_\_\_: मीन - गुरु  
नक्षत्र-चरण \_\_\_\_\_: रेवती - 2  
नक्षत्र स्वामी \_\_\_\_\_: बुध  
योग \_\_\_\_\_: सिद्ध  
करण \_\_\_\_\_: गर  
गण \_\_\_\_\_: देव  
योनि \_\_\_\_\_: गज  
नाड़ी \_\_\_\_\_: अन्त्य  
वर्ण \_\_\_\_\_: विप्र  
वश्य \_\_\_\_\_: जलचर  
वर्ग \_\_\_\_\_: सर्प  
युँजा \_\_\_\_\_: पूर्व  
हंसक \_\_\_\_\_: जल  
जन्म नामाक्षर \_\_\_\_\_: दो-दौलत  
पाया(राशि-नक्षत्र) \_\_\_\_\_: ताम्र - स्वर्ण  
सूर्य राशि(पाश्चात्य) \_\_\_\_\_: कुम्भ

## पंचांग

दादा का नाम \_\_\_\_\_ :  
पिता का नाम \_\_\_\_\_ :  
माता का नाम \_\_\_\_\_ :  
जाति \_\_\_\_\_ :  
गोत्र \_\_\_\_\_ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1923	पौष	30
पंजाबी	संवत : 2058	माघ	7
बंगाली	सन् : 1408	माघ	6
तमिल	संवत : 2058	थई	7
केरल	कोल्लम : 1177	मकरम	7
नेपाली	संवत : 2058	माघ	7
चैत्रादि	संवत : 2058	पौष	शुक्ल 6
कार्तिकादि	संवत : 2058	पौष	शुक्ल 6

### पंचांग

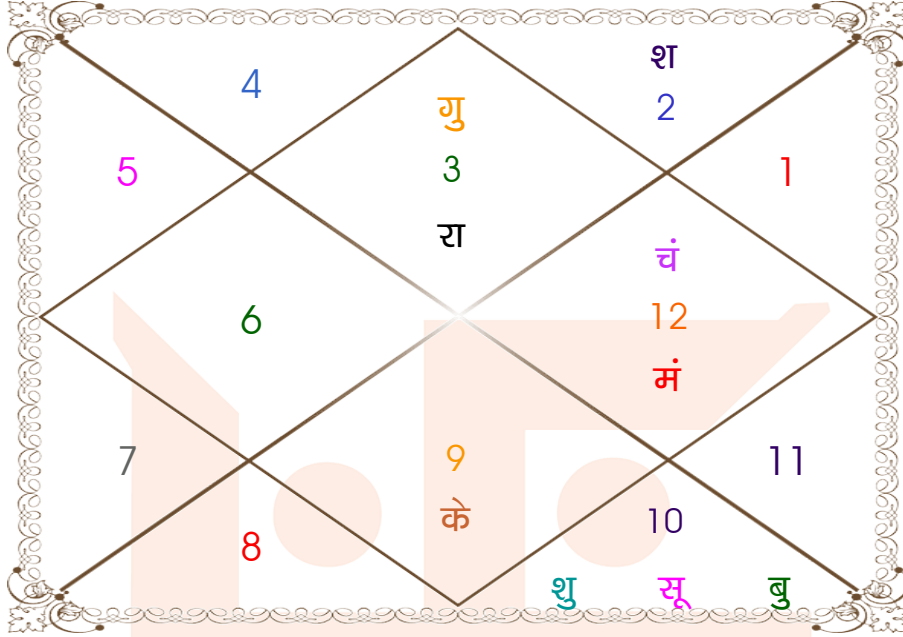
सूर्योदय कालीन तिथि \_\_\_\_\_ : 6  
तिथि समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 08:01:47  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_ : 7  
सूर्योदय कालीन नक्षत्र \_\_\_\_\_ : रेवती  
नक्षत्र समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 08:08:36 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : रेवती  
सूर्योदय कालीन योग \_\_\_\_\_ : शिव  
योग समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 13:05:10 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : सिद्ध  
सूर्योदय कालीन करण \_\_\_\_\_ : तैतिल  
करण समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 08:01:47 घंटे  
जन्म करण \_\_\_\_\_ : गर  
भयात \_\_\_\_\_ : 27:32:10  
भभोग \_\_\_\_\_ : 66:51:09  
भोग्य दशा काल \_\_\_\_\_ : बुध 10 वर्ष 0 मा 8 दि

### घात चक्र

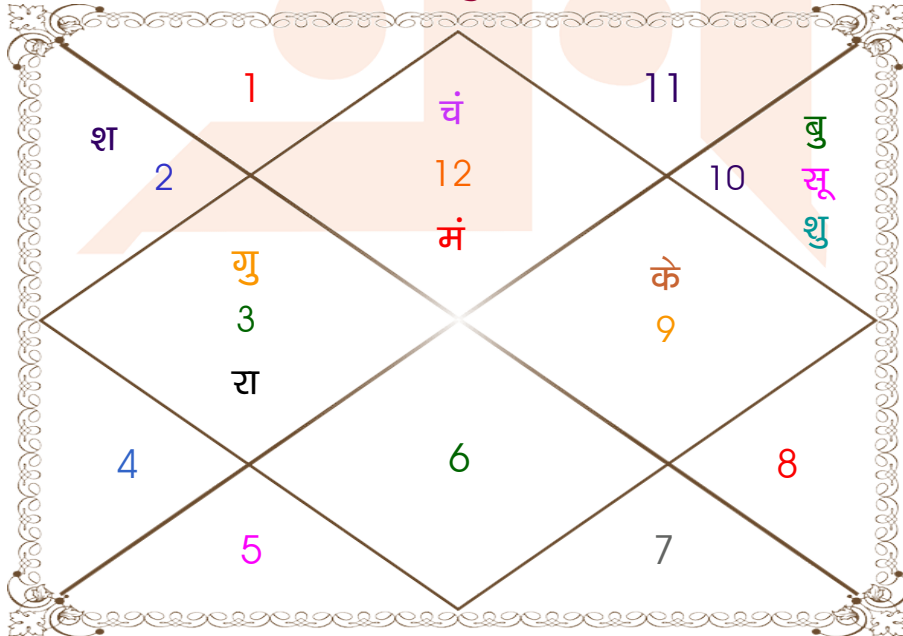
मास \_\_\_\_\_ : फाल्गुन  
तिथि \_\_\_\_\_ : 5-10-15  
दिन \_\_\_\_\_ : शुक्रवार  
नक्षत्र \_\_\_\_\_ : आश्लेषा  
योग \_\_\_\_\_ : वज्र  
करण \_\_\_\_\_ : चतुष्पाद  
प्रहर \_\_\_\_\_ : 4  
वर्ग \_\_\_\_\_ : गरुड़  
लग्न \_\_\_\_\_ : सिंह  
सूर्य \_\_\_\_\_ : मिथुन  
चन्द्र \_\_\_\_\_ : कुम्भ  
मंगल \_\_\_\_\_ : कर्क  
बुध \_\_\_\_\_ : कुम्भ  
गुरु \_\_\_\_\_ : सिंह  
शुक्र \_\_\_\_\_ : कन्या  
शनि \_\_\_\_\_ : वृष  
राहु \_\_\_\_\_ : तुला

# जन्म कुण्डली

## लग्न कुण्डली



## चन्द्र कुण्डली



# लग्न कुण्डली और दशा

## लग्न कुण्डली

मं चं		श	रा ल गु
शु सू बु			
के			

## लग्न कुण्डली

श		मं चं
रा गु	ल	
		शु सू बु
		के

विंशोत्तरी  
बुध 10वर्ष 0मा 8दि  
बुध

20/01/2002

30/01/2115

बुध	29/01/2012
केतु	29/01/2019
शुक्र	29/01/2039
सूर्य	28/01/2045
चन्द्र	29/01/2055
मंगल	28/01/2062
राहु	29/01/2080
गुरु	29/01/2096
शनि	30/01/2115

योगिनी  
उल्का 3वर्ष 6मा 13दि  
धान्या

05/08/2023

04/08/2026

धान्या	04/11/2023
भ्रामरी	05/03/2024
भद्रिका	04/08/2024
उल्का	03/02/2025
सिद्धा	04/09/2025
संकटा	05/05/2026
मंगला	05/06/2026
पिंगला	04/08/2026

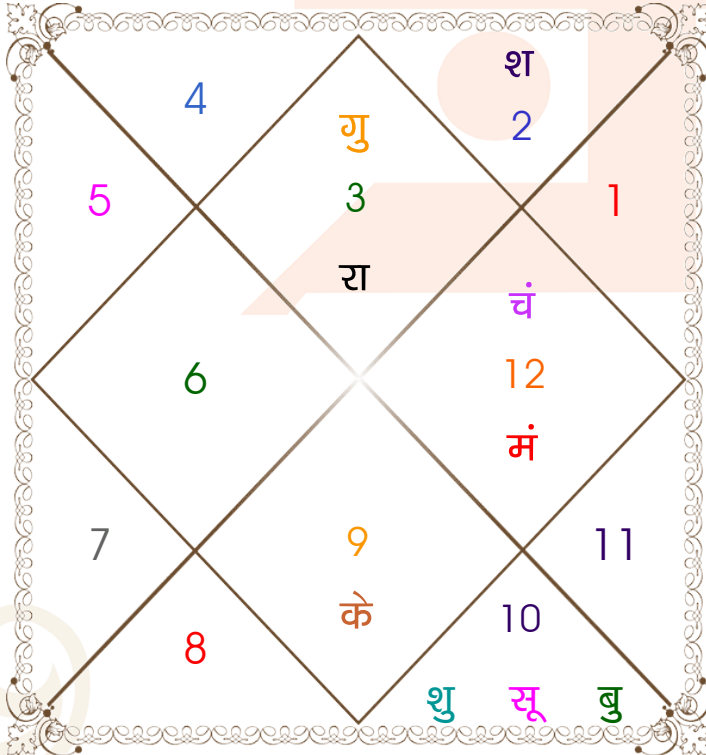
## ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मिथु	19:43:07	313:44:49	आर्द्रा	4	6	बुध	राहु	मंगल	---
सूर्य			मक	06:19:33	01:01:04	उत्तराषाढा	3	21	शनि	सूर्य	बुध	शत्रु राशि
चंद्र			मीन	22:08:21	11:57:01	रेवती	2	27	गुरु	बुध	सूर्य	सम राशि
मंगल			मीन	07:12:45	00:43:42	उ०भाद्रपद	2	26	गुरु	शनि	बुध	मित्र राशि
बुध	व		मक	20:21:37	00:18:27	श्रवण	4	22	शनि	चंद्र	केतु	सम राशि
गुरु	व		मिथु	14:16:21	00:07:00	आर्द्रा	3	6	बुध	राहु	बुध	शत्रु राशि
शुक्र	अ		मक	07:45:14	01:15:25	उत्तराषाढा	4	21	शनि	सूर्य	केतु	मित्र राशि
शनि	व		वृष	14:28:22	00:02:03	रोहिणी	2	4	शुक्र	चंद्र	गुरु	मित्र राशि
राहु	व		मिथु	02:41:28	00:02:03	मृगशिरा	3	5	बुध	मंगल	शुक्र	उच्च राशि
केतु	व		धनु	02:41:28	00:02:03	मूल	1	19	गुरु	केतु	शुक्र	उच्च राशि
हर्ष			मक	29:33:47	00:03:15	धनिष्ठा	2	23	शनि	मंगल	शनि	---
नेप			मक	14:16:19	00:02:16	श्रवण	2	22	शनि	चंद्र	गुरु	---
प्लूटो			वृश्चि	22:48:04	00:01:48	ज्येष्ठा	2	18	मंगल	बुध	चंद्र	---
दशम भाव			मीन	06:52:39	--	उ०भाद्रपद	--	26	गुरु	शनि	बुध	--

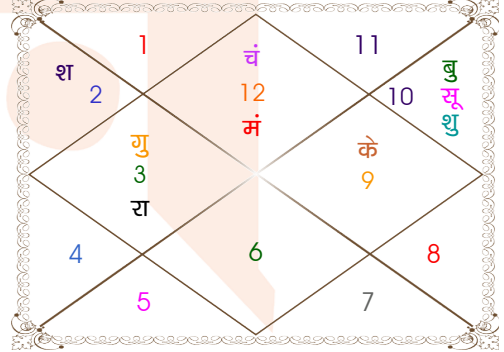
व - वकी स - स्थिर  
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त  
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:52:53

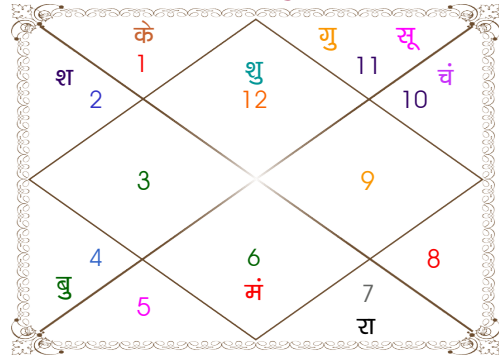
### लग्न-चलित



### चन्द्र कुंडली



### नवमांश कुंडली



## चलित तथा निरयण भाव चलित

### चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	मिथुन 02:34:43	मिथुन 19:43:07
2	कर्क 02:34:43	कर्क 15:26:18
3	कर्क 28:17:53	सिंह 11:09:28
4	सिंह 24:01:04	कन्या 06:52:39
5	कन्या 24:01:04	तुला 11:09:28
6	तुला 28:17:53	वृश्चिक 15:26:18
7	धनु 02:34:43	धनु 19:43:07
8	मकर 02:34:43	मकर 15:26:18
9	मकर 28:17:53	कुम्भ 11:09:28
10	कुम्भ 24:01:04	मीन 06:52:39
11	मीन 24:01:04	मेष 11:09:28
12	मेष 28:17:53	वृष 15:26:18

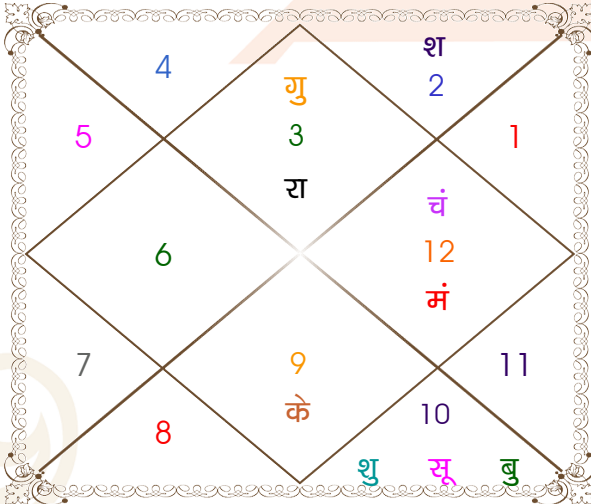
### निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मिथुन	19:43:07
2	कर्क	12:01:55
3	सिंह	06:57:28
4	कन्या	06:52:39
5	तुला	11:46:02
6	वृश्चिक	17:27:55
7	धनु	19:43:07
8	मकर	12:01:55
9	कुम्भ	06:57:28
10	मीन	06:52:39
11	मेष	11:46:02
12	वृष	17:27:55

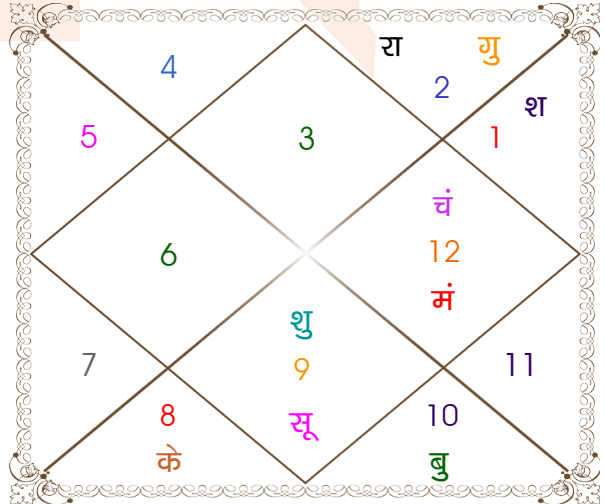
### तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य
आश्लेषा	मघा	पूर्वाफाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा
ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उ०भाद्रपद

### चलित कुंडली



### भाव कुंडली



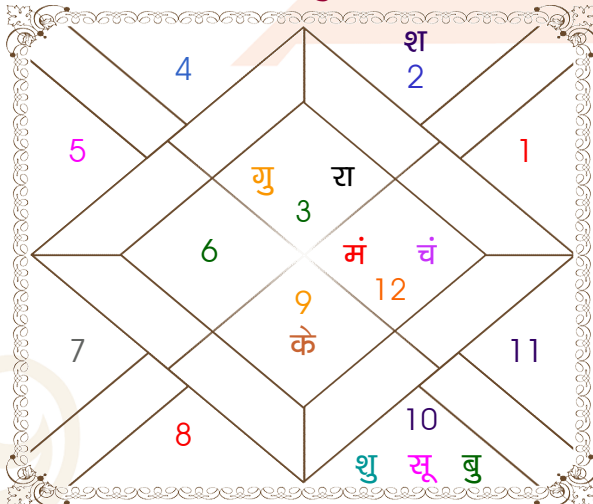
## कारक, अवस्था, रश्मि

ग्रह	----- कारक -----			----- अवस्था -----			ग्रह बल
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	
सूर्य	कलत्र	पितृ	वृद्ध	खल	नृत्यलिप्सा	1.92	55 %
चंद्र	आत्मा	मातृ	कुमार	निपीदित	नृत्यलिप्सा	8.35	32 %
मंगल	ज्ञाति	भातृ	वृद्ध	मुदित	नृत्यलिप्सा	5.21	75 %
बुध	अमात्य	ज्ञाति	कुमार	निपीदित	आगम	0.76	58 %
गुरु	मातृ	धन	युवा	खल	नृत्यलिप्सा	2.48	55 %
शुक्र	पुत्र	कलत्र	वृद्ध	विकल	नृत्यलिप्सा	4.48	35 %
शनि	भातृ	आयु	युवा	मुदित	निद्रा	0.68	8 %
राहु	---	ज्ञान	बाल	दीप्त	आगम	0.00	99 %
केतु	---	मोक्ष	बाल	दीप्त	सभा	0.00	99 %
कुल						23.88	

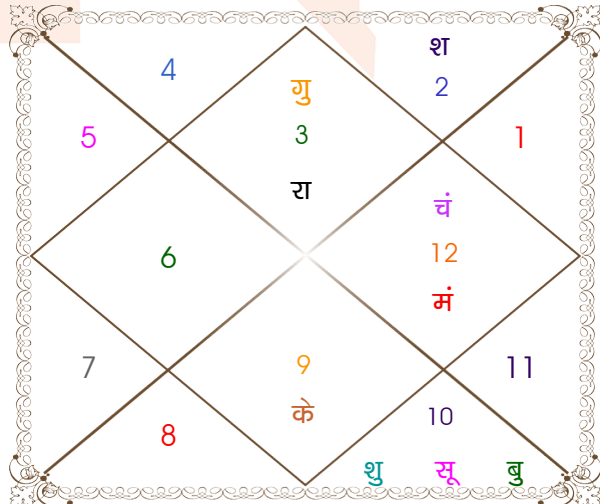
### तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य
आश्लेषा	मघा	पूर्वाषाढा	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा
ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उ०भाद्रपद

### चलित कुंडली



### लग्न-चलित



## विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : बुध 10 वर्ष 0 मास 8 दिन

बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष
20/01/2002	29/01/2012	29/01/2019	29/01/2039	28/01/2045
29/01/2012	29/01/2019	29/01/2039	28/01/2045	29/01/2055
00/00/0000	केतु 26/06/2012	शुक्र 30/05/2022	सूर्य 18/05/2039	चंद्र 29/11/2045
00/00/0000	शुक्र 26/08/2013	सूर्य 30/05/2023	चंद्र 17/11/2039	मंगल 30/06/2046
20/01/2002	सूर्य 01/01/2014	चंद्र 28/01/2025	मंगल 24/03/2040	राहु 29/12/2047
सूर्य 28/02/2002	चंद्र 02/08/2014	मंगल 30/03/2026	राहु 15/02/2041	गुरु 29/04/2049
चंद्र 30/07/2003	मंगल 29/12/2014	राहु 30/03/2029	गुरु 05/12/2041	शनि 29/11/2050
मंगल 26/07/2004	राहु 17/01/2016	गुरु 29/11/2031	शनि 17/11/2042	बुध 29/04/2052
राहु 13/02/2007	गुरु 23/12/2016	शनि 29/01/2035	बुध 23/09/2043	केतु 28/11/2052
गुरु 21/05/2009	शनि 31/01/2018	बुध 29/11/2037	केतु 29/01/2044	शुक्र 30/07/2054
शनि 29/01/2012	बुध 29/01/2019	केतु 29/01/2039	शुक्र 28/01/2045	सूर्य 29/01/2055

मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष
29/01/2055	28/01/2062	29/01/2080	29/01/2096	30/01/2115
28/01/2062	29/01/2080	29/01/2096	30/01/2115	00/00/0000
मंगल 27/06/2055	राहु 11/10/2064	गुरु 18/03/2082	शनि 01/02/2099	बुध 27/06/2117
राहु 14/07/2056	गुरु 06/03/2067	शनि 28/09/2084	बुध 12/10/2101	केतु 24/06/2118
गुरु 20/06/2057	शनि 10/01/2070	बुध 04/01/2087	केतु 21/11/2102	शुक्र 24/04/2121
शनि 30/07/2058	बुध 30/07/2072	केतु 11/12/2087	शुक्र 20/01/2106	सूर्य 21/01/2122
बुध 27/07/2059	केतु 17/08/2073	शुक्र 11/08/2090	सूर्य 02/01/2107	00/00/0000
केतु 23/12/2059	शुक्र 17/08/2076	सूर्य 30/05/2091	चंद्र 03/08/2108	00/00/0000
शुक्र 21/02/2061	सूर्य 12/07/2077	चंद्र 28/09/2092	मंगल 11/09/2109	00/00/0000
सूर्य 29/06/2061	चंद्र 10/01/2079	मंगल 04/09/2093	राहु 18/07/2112	00/00/0000
चंद्र 28/01/2062	मंगल 29/01/2080	राहु 29/01/2096	गुरु 30/01/2115	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल बुध 9 वर्ष 11 मा 29 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

## विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

<b>शुक्र - मंगल</b> 28/01/2025 30/03/2026	<b>शुक्र - राहु</b> 30/03/2026 30/03/2029	<b>शुक्र - गुरु</b> 30/03/2029 29/11/2031	<b>शुक्र - शनि</b> 29/11/2031 29/01/2035	<b>शुक्र - बुध</b> 29/01/2035 29/11/2037
मंगल 22/02/2025 राहु 27/04/2025 गुरु 23/06/2025 शनि 29/08/2025 बुध 29/10/2025 केतु 22/11/2025 शुक्र 01/02/2026 सूर्य 23/02/2026 चंद्र 30/03/2026	राहु 11/09/2026 गुरु 04/02/2027 शनि 27/07/2027 बुध 29/12/2027 केतु 02/03/2028 शुक्र 01/09/2028 सूर्य 26/10/2028 चंद्र 25/01/2029 मंगल 30/03/2029	गुरु 07/08/2029 शनि 08/01/2030 बुध 26/05/2030 केतु 22/07/2030 शुक्र 31/12/2030 सूर्य 18/02/2031 चंद्र 10/05/2031 मंगल 06/07/2031 राहु 29/11/2031	शनि 30/05/2032 बुध 10/11/2032 केतु 16/01/2033 शुक्र 28/07/2033 सूर्य 24/09/2033 चंद्र 29/12/2033 मंगल 07/03/2034 राहु 27/08/2034 गुरु 29/01/2035	बुध 24/06/2035 केतु 24/08/2035 शुक्र 12/02/2036 सूर्य 04/04/2036 चंद्र 29/06/2036 मंगल 28/08/2036 राहु 31/01/2037 गुरु 18/06/2037 शनि 29/11/2037
<b>शुक्र - केतु</b> 29/11/2037 29/01/2039	<b>सूर्य - सूर्य</b> 29/01/2039 18/05/2039	<b>सूर्य - चंद्र</b> 18/05/2039 17/11/2039	<b>सूर्य - मंगल</b> 17/11/2039 24/03/2040	<b>सूर्य - राहु</b> 24/03/2040 15/02/2041
केतु 23/12/2037 शुक्र 04/03/2038 सूर्य 26/03/2038 चंद्र 30/04/2038 मंगल 25/05/2038 राहु 28/07/2038 गुरु 23/09/2038 शनि 29/11/2038 बुध 29/01/2039	सूर्य 03/02/2039 चंद्र 12/02/2039 मंगल 19/02/2039 राहु 07/03/2039 गुरु 22/03/2039 शनि 08/04/2039 बुध 24/04/2039 केतु 30/04/2039 शुक्र 18/05/2039	चंद्र 02/06/2039 मंगल 13/06/2039 राहु 10/07/2039 गुरु 04/08/2039 शनि 02/09/2039 बुध 28/09/2039 केतु 08/10/2039 शुक्र 08/11/2039 सूर्य 17/11/2039	मंगल 24/11/2039 राहु 13/12/2039 गुरु 31/12/2039 शनि 20/01/2040 बुध 07/02/2040 केतु 14/02/2040 शुक्र 07/03/2040 सूर्य 13/03/2040 चंद्र 24/03/2040	राहु 12/05/2040 गुरु 25/06/2040 शनि 16/08/2040 बुध 01/10/2040 केतु 21/10/2040 शुक्र 14/12/2040 सूर्य 31/12/2040 चंद्र 27/01/2041 मंगल 15/02/2041
<b>सूर्य - गुरु</b> 15/02/2041 05/12/2041	<b>सूर्य - शनि</b> 05/12/2041 17/11/2042	<b>सूर्य - बुध</b> 17/11/2042 23/09/2043	<b>सूर्य - केतु</b> 23/09/2043 29/01/2044	<b>सूर्य - शुक्र</b> 29/01/2044 28/01/2045
गुरु 26/03/2041 शनि 12/05/2041 बुध 22/06/2041 केतु 09/07/2041 शुक्र 27/08/2041 सूर्य 10/09/2041 चंद्र 05/10/2041 मंगल 22/10/2041 राहु 05/12/2041	शनि 29/01/2042 बुध 19/03/2042 केतु 08/04/2042 शुक्र 05/06/2042 सूर्य 22/06/2042 चंद्र 21/07/2042 मंगल 10/08/2042 राहु 01/10/2042 गुरु 17/11/2042	बुध 31/12/2042 केतु 18/01/2043 शुक्र 10/03/2043 सूर्य 26/03/2043 चंद्र 21/04/2043 मंगल 09/05/2043 राहु 25/06/2043 गुरु 05/08/2043 शनि 23/09/2043	केतु 01/10/2043 शुक्र 22/10/2043 सूर्य 28/10/2043 चंद्र 08/11/2043 मंगल 15/11/2043 राहु 04/12/2043 गुरु 22/12/2043 शनि 11/01/2044 बुध 29/01/2044	शुक्र 30/03/2044 सूर्य 17/04/2044 चंद्र 17/05/2044 मंगल 08/06/2044 राहु 02/08/2044 गुरु 19/09/2044 शनि 16/11/2044 बुध 07/01/2045 केतु 28/01/2045

## विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

<b>चंद्र - चंद्र</b> 28/01/2045 29/11/2045	<b>चंद्र - मंगल</b> 29/11/2045 30/06/2046	<b>चंद्र - राहु</b> 30/06/2046 29/12/2047	<b>चंद्र - गुरु</b> 29/12/2047 29/04/2049	<b>चंद्र - शनि</b> 29/04/2049 29/11/2050
चंद्र 23/02/2045 मंगल 12/03/2045 राहु 27/04/2045 गुरु 06/06/2045 शनि 25/07/2045 बुध 06/09/2045 केतु 24/09/2045 शुक्र 13/11/2045 सूर्य 29/11/2045	मंगल 11/12/2045 राहु 12/01/2046 गुरु 09/02/2046 शनि 15/03/2046 बुध 14/04/2046 केतु 27/04/2046 शुक्र 01/06/2046 सूर्य 12/06/2046 चंद्र 30/06/2046	राहु 20/09/2046 गुरु 02/12/2046 शनि 27/02/2047 बुध 15/05/2047 केतु 16/06/2047 शुक्र 15/09/2047 सूर्य 13/10/2047 चंद्र 27/11/2047 मंगल 29/12/2047	गुरु 03/03/2048 शनि 19/05/2048 बुध 27/07/2048 केतु 25/08/2048 शुक्र 14/11/2048 सूर्य 08/12/2048 चंद्र 18/01/2049 मंगल 15/02/2049 राहु 29/04/2049	शनि 30/07/2049 बुध 20/10/2049 केतु 23/11/2049 शुक्र 27/02/2050 सूर्य 28/03/2050 चंद्र 15/05/2050 मंगल 18/06/2050 राहु 13/09/2050 गुरु 29/11/2050
<b>चंद्र - बुध</b> 29/11/2050 29/04/2052	<b>चंद्र - केतु</b> 29/04/2052 28/11/2052	<b>चंद्र - शुक्र</b> 28/11/2052 30/07/2054	<b>चंद्र - सूर्य</b> 30/07/2054 29/01/2055	<b>मंगल - मंगल</b> 29/01/2055 27/06/2055
बुध 10/02/2051 केतु 12/03/2051 शुक्र 06/06/2051 सूर्य 02/07/2051 चंद्र 14/08/2051 मंगल 14/09/2051 राहु 30/11/2051 गुरु 07/02/2052 शनि 29/04/2052	केतु 12/05/2052 शुक्र 16/06/2052 सूर्य 27/06/2052 चंद्र 15/07/2052 मंगल 27/07/2052 राहु 28/08/2052 गुरु 25/09/2052 शनि 29/10/2052 बुध 28/11/2052	शुक्र 10/03/2053 सूर्य 09/04/2053 चंद्र 30/05/2053 मंगल 04/07/2053 राहु 04/10/2053 गुरु 24/12/2053 शनि 30/03/2054 बुध 25/06/2054 केतु 30/07/2054	सूर्य 08/08/2054 चंद्र 23/08/2054 मंगल 03/09/2054 राहु 30/09/2054 गुरु 25/10/2054 शनि 23/11/2054 बुध 19/12/2054 केतु 29/12/2054 शुक्र 29/01/2055	मंगल 06/02/2055 राहु 01/03/2055 गुरु 21/03/2055 शनि 13/04/2055 बुध 04/05/2055 केतु 13/05/2055 शुक्र 07/06/2055 सूर्य 14/06/2055 चंद्र 27/06/2055
<b>मंगल - राहु</b> 27/06/2055 14/07/2056	<b>मंगल - गुरु</b> 14/07/2056 20/06/2057	<b>मंगल - शनि</b> 20/06/2057 30/07/2058	<b>मंगल - बुध</b> 30/07/2058 27/07/2059	<b>मंगल - केतु</b> 27/07/2059 23/12/2059
राहु 23/08/2055 गुरु 13/10/2055 शनि 13/12/2055 बुध 05/02/2056 केतु 28/02/2056 शुक्र 02/05/2056 सूर्य 21/05/2056 चंद्र 22/06/2056 मंगल 14/07/2056	गुरु 29/08/2056 शनि 22/10/2056 बुध 09/12/2056 केतु 29/12/2056 शुक्र 24/02/2057 सूर्य 13/03/2057 चंद्र 10/04/2057 मंगल 30/04/2057 राहु 20/06/2057	शनि 23/08/2057 बुध 20/10/2057 केतु 12/11/2057 शुक्र 19/01/2058 सूर्य 08/02/2058 चंद्र 14/03/2058 मंगल 06/04/2058 राहु 06/06/2058 गुरु 30/07/2058	बुध 19/09/2058 केतु 10/10/2058 शुक्र 10/12/2058 सूर्य 28/12/2058 चंद्र 27/01/2059 मंगल 17/02/2059 राहु 13/04/2059 गुरु 31/05/2059 शनि 27/07/2059	केतु 05/08/2059 शुक्र 30/08/2059 सूर्य 06/09/2059 चंद्र 19/09/2059 मंगल 27/09/2059 राहु 20/10/2059 गुरु 09/11/2059 शनि 02/12/2059 बुध 23/12/2059

## शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

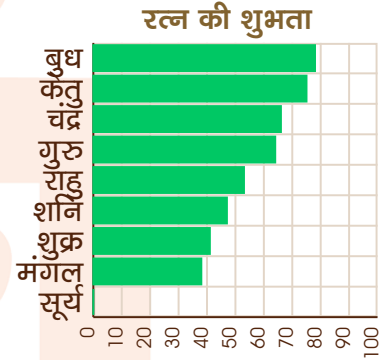
मूलांक	2
भाग्यांक	7
मित्र अंक	2, 7, 8
शत्रु अंक	4, 5, 6
शुभ वर्ष	20,29,38,47,56
शुभ दिन	बुध, शुक्र, शनि
शुभ ग्रह	बुध, शुक्र, शनि
मित्र राशि	वृश्चिक, धनु
मित्र लग्न	कन्या, कुम्भ, मेष
अनुकूल देवता	जगदम्बा
शुभ रत्न	पन्ना
शुभ उपरत्न	संगपन्ना, मरगज
भाग्य रत्न	नीलम
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	हरित
शुभ दिशा	उत्तर
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	हाथी दाँत, कपूर, फल
दान अन्न	मूँग
दान द्रव्य	घी

## रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	78%	दुर्घटना से बचाव, स्वास्थ्य, सुख
लहसुनिया	केतु	75%	दम्पति, स्वास्थ्य
मोती	चंद्र	66%	व्यावसायिक उन्नति, धन
पुखराज	गुरु	64%	स्वास्थ्य, दम्पति, व्यावसायिक उन्नति
गोमेद	राहु	53%	स्वास्थ्य, दुर्घटना से बचाव
नीलम	शनि	47%	व्यय, दुर्घटना, नेष्ट भाग्य
हीरा	शुक्र	41%	दुर्घटना, व्यय, सन्तति कष्ट
मूंगा	मंगल	38%	व्यावसायिक हानि, हानि, शत्रु व रोग
माणिक्य	सूर्य	0%	दुर्घटना, पराक्रम हानि



### दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
बुध	29/01/2012	12%	53%	38%	91%	64%	52%	47%	53%	75%
केतु	29/01/2019	0%	53%	50%	78%	64%	52%	22%	31%	88%
शुक्र	29/01/2039	0%	53%	38%	84%	64%	58%	55%	59%	81%
सूर्य	28/01/2045	25%	72%	50%	78%	70%	16%	22%	31%	62%
चंद्र	29/01/2055	12%	78%	38%	84%	64%	41%	47%	31%	62%
मंगल	28/01/2062	12%	72%	56%	66%	70%	41%	47%	31%	81%
राहु	29/01/2080	0%	53%	12%	78%	64%	52%	55%	66%	62%
गुरु	29/01/2096	12%	72%	50%	66%	77%	16%	47%	53%	75%
शनि	30/01/2115	0%	53%	12%	84%	64%	52%	61%	59%	62%

## साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

### प्रथम चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	23/07/2002-08/01/2003 07/04/2003-06/09/2004 13/01/2005-26/05/2005
अष्टम स्थानस्थ ढैया	15/11/2011-16/05/2012 04/08/2012-02/11/2014 -----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	29/04/2022-12/07/2022 17/01/2023-29/03/2025 -----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	29/03/2025-03/06/2027 20/10/2027-23/02/2028 -----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	03/06/2027-20/10/2027 23/02/2028-08/08/2029 05/10/2029-17/04/2030

### द्वितीय चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	31/05/2032-13/07/2034 -----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	28/01/2041-06/02/2041 26/09/2041-11/12/2043 23/06/2044-30/08/2044
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	25/02/2052-14/05/2054 02/09/2054-05/02/2055 -----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	14/05/2054-02/09/2054 05/02/2055-07/04/2057 -----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	07/04/2057-27/05/2059 -----

### तृतीय चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	11/07/2061-13/02/2062 07/03/2062-24/08/2063 06/02/2064-09/05/2064
अष्टम स्थानस्थ ढैया	04/11/2070-05/02/2073 31/03/2073-23/10/2073 -----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	12/04/2081-03/08/2081 07/01/2082-20/03/2084 -----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	20/03/2084-21/05/2086 21/05/2086-08/02/2087 -----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	21/05/2086-21/05/2086 08/02/2087-18/07/2088 31/10/2088-05/04/2089

### शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	स्वास्थ्य
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	सन्तति सुख
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	शुभ	भाग्योदय
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	व्यावसाय
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	सम	अल्प बचत

## साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

**ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।**

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।  
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

**ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।**

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

**ॐ शं शनैश्चराय नमः ।**

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

## मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।  
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

\*\*\*\*\*

आपके जन्म समय में मंगल चन्द्रमा के साथ जन्म कुंडली में स्थित है। अतः आप चन्द्र कुण्डली से मांगलिक हैं। परन्तु मंगल का योग चन्द्रमा से होने पर आपका मांगलिक दोष समाप्त हो जाता है। ऐसा मंगल आपको अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्रदान करेगा। इसके शुभ प्रभाव से आप मानसिक तथा शारीरिक रूप से पूर्ण स्वस्थ रहेंगे। परन्तु स्वभाव में यदा कदा उग्रता का भाव उत्पन्न होता रहेगा। इस मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में थोड़ा विलम्ब होगा परन्तु विवाह अत्यन्त ही सुखद एवं शान्त वातावरण में सम्पन्न होगा। किसी भी प्रकार से अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा। आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा जिससे आप प्रसन्नता पूर्वक दाम्पत्य सुख का उपभोग कर सकेंगे।

चन्द्रमा के साथ मंगल की युति होने से आप एक स्वस्थ पुरुष होंगे तथा मानसिक रूप से भी कभी विचलित नहीं रहेंगे। चन्द्रमा से चतुर्थ भाव पर मंगल की दृष्टि होने से सुख संसाधनों से आप सर्वदा युक्त रहेंगे। जीवन में सुखपूर्वक इनका उपभोग करेंगे। आप चल या अचल सम्पत्ति के स्वामित्व को भी प्राप्त कर सकेंगे। सप्तम भाव पर मंगल की दृष्टि से आपकी पत्नी का शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा वे स्वभाव से क्रोध के भाव को प्रदर्शित करेंगी। इससे दाम्पत्य जीवन पर कोई दुष्प्रभाव नहीं पड़ेगा। अष्टम भाव पर मंगल की दृष्टि से शारीरिक कुशलता बनी रहेगी तथा अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी यथा समय सिद्ध होते रहेंगे जिससे आप मानसिक रूप से शान्ति प्राप्त करेंगे। इस प्रकार आपका दाम्पत्य जीवन सुख एवं शान्ति से व्यतीत होगा।

अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखमय बनाने के लिए आपको किसी गैरमांगलिक या ऐसी कन्या से विवाह करना चाहिए जिसकी कुंडली में मांगलिक दोष उचित

नियमानुसार भंग हो रहा हो। यदि आप इस प्रकार से अपना दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करेंगे तो आप अत्यन्त ही भाग्यशाली पुरुष सिद्ध होंगे। आप भौतिक सुख संसाधनों से युक्त होकर प्रसन्नता पूर्वक जीवन यापन करेंगे। साथ ही समाज में भी आप पूर्ण मान प्रतिष्ठा तथा यश प्राप्त करने में भी सफल रहेंगे। आपकी पत्नी भी एक सौभाग्यशाली महिला होंगी तथा आपके परस्पर संबंध भी हमेशा मधुर रहेंगे एवं अनावश्यक तनाव तथा कटुता से आप मुक्त ही रहेंगे।

इसके अतिरिक्त कुंडली मिलान के समय समान भाव में मंगल की यदि आवश्यक न हो तो उपेक्षा ही करें क्योंकि समान भावों में मंगल के रहने से दाम्पत्य जीवन में अनावश्यक बाधाएं तथा समस्याएं उत्पन्न होती हैं जिससे यदा कदा आपसी संबंधों में तनाव उत्पन्न होता है। अन्य भावों में स्थित मंगल शुभ रहेगा एवं दाम्पत्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा। अतः सोच समझ कर इस विषय में अन्तिम निर्णय लेना चाहिए।



## कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।  
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाद्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाद्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

### काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

### जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में अनन्त नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप जातक के जीवन में समय-समय पर थोड़ी बहुत बाधाएं आती रहती हैं। व्यक्तित्व निर्माण में परिश्रम करने पर ही लाभ मिलता है। विद्या व्यवसाय सामान्य रहती है। आगे बढ़ने के लिए थोड़ा बहुत संघर्ष करना पड़ता है। मानसिक परेशानियाँ समय-समय पर आती रहती हैं। जीवन में कभी-कभी अपयश मिलता है जिससे जातक को विरक्ति पैदा होती है। जातक अपने जीवन में अनेक बार कार्य (व्यवसाय) को बदलता है। जिसमें कभी नुकसान भी हाथ लगता है। खासकर साहूकारी के व्यवसाय में अधिक नुकसान पाता है। इस योग के कारण अनेक तरह के नीच कर्म जातक के द्वारा किये जाते हैं और जातक को समय-समय पर रोग व्याधि ग्रसित करती रहती है। इसमें थोड़ा अधिक खर्च हो जाने के कारण आर्थिक स्थिति असामान्य हो जाती है एवं जातक समय-समय पर मानसिक रूप से अशान्त हो जाता है। जातक का वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए कभी-कभी दुःखमय हो जाता है तथा मातृ-पितृ सुख का थोड़ा बहुत अभाव रहता है। अपने रिश्तेदार समय-समय पर नुकसान पहुँचाते हैं। जातक को केस मुकदमों में प्रायः हार का सामना करना पड़ता है और सामाजिक प्रतिष्ठा का हास होता है। जातक को प्रायः सुख का अभाव रहता है और अनेक शत्रु होते हैं। वे समय-समय पर षड्यन्त्र रचते रहते हैं। परन्तु वे अपने षड्यन्त्र में सफल नहीं होते। दूसरों से कभी अपमान सहना पड़ता है। लेकिन इतना सब कुछ होने के बाद भी जातक के जीवन में एक चमत्कारिक समय आता है।

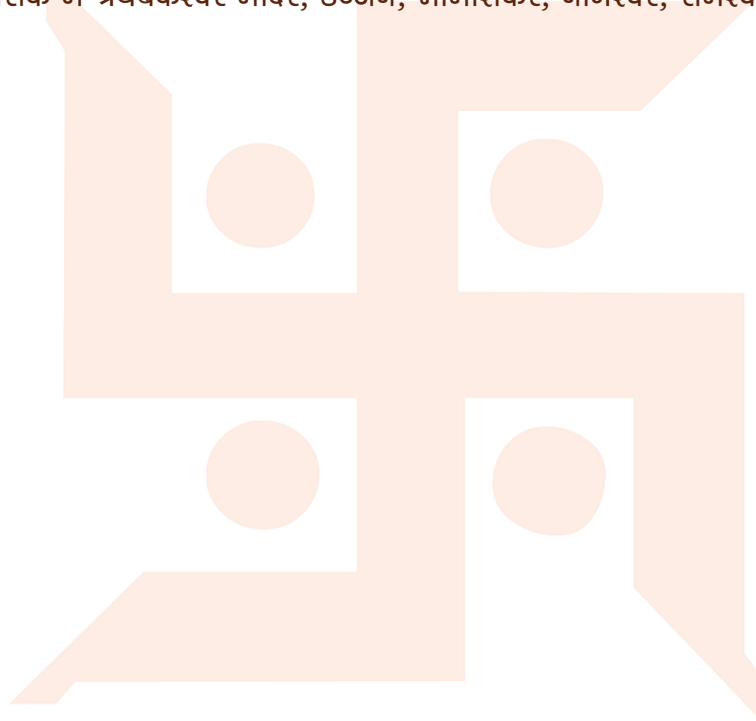
यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. 'ॐ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अट्ठारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।
9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ॐ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।

11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

#### विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।



# पितृदोष विचार

## पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

## पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

### पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

### पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

**ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।**

**नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥**

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

### **पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :**

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृओं का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

### **आपकी कुण्डली में पितृदोष**

आपकी कुण्डली में किसी भी प्रकार का पितृदोष विद्यमान नहीं है, अतः आपको जीवन में पितृदोष के कारण कष्ट या परेशानी नहीं होगी ।

### **नोट :**

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं । यह सूर्यबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं । त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है । अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है ।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है । इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है । यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं ।

## रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते हैं। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते हैं, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहाँ आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापों का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यों में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ेतरा कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

### आपकी कुंडली और रुद्राक्ष

आपकी कुंडली मिथुन लग्न की हैं। आप बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं आपका मस्तिष्क सदैव विचारमान व गतिमान रहता है इसलिए हर समय कुछ न कुछ आपके मस्तिष्क में चलता रहता है। लग्न स्वामी बुध होने की वजह से कठिन से कठिन काम को भी आप अपनी बुद्धि कौशल से आसान बना लेते हैं। द्विस्वभाव लग्न होने से आपके स्वभाव में भी दोहरापन (वास्तव में लचीलापन) होता है। समय के अनुसार अपने व्यवहार को बदल लेना अथवा हर परिस्थिति में स्वयं को ढाल लेना, वातावरण को अपने अनुसार ढाल लेना या स्वयं वातावरण के अनुसार ढल जाना आपके स्वभाव की विशेषता होती है। आपका व्यवहारिक ज्ञान अच्छा होता है। हर चीज को सीखने एवं पाने की ललक आप में रहती है। आप खाली नहीं बैठ सकते हैं। हर

समय व्यस्त रहना कुछ नया करने की इच्छा आपमें रहती है। आपका हँसमुख स्वभाव आपको हर जगह लोकप्रिय बनाता है।

6, 8, व 12 भाव त्रिक भाव के नाम से जाने जाते हैं। त्रिक भावों के स्वामी अपने स्वामित्व के आधार पर स्वयं में अशुभता लिए होते हैं। 6,8,12 भावों को त्रिक भाव के नाम से जाना जाता है। इन भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता है। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

मिथुन लग्न में छठे भाव व एकादश भाव के स्वामी मंगल हैं। आप अपने साहस का उपयोग अनैतिक कार्यों के लिए कर सकते हैं, मिथ्या वचन बोलने से भी आप बचे, तथा युद्ध अथवा लड़ाई हेतु सदैव तत्पर हो सकते हैं। शत्रुओं पर विजय प्राप्ति सहज हो जाती है। अपने बड़े भाई-बहनों से वैर-भाव रखने वाले हो सकते हैं। विष, अग्नि, शास्त्र सेपीड़ित हो सकते हैं।

अष्टम व नवम भाव के स्वामी शनि हैं। अष्टम भाव के स्वामी शनि के प्रभाव से आपके पिता के स्वास्थ्य में कमी, भाग्यवृद्धि में बाधक, अधिनस्थों की ओर से सहयोग में कमी, लम्बी अवधि के रोग, ऋण आपके कार्यों में व्यर्थ का विलम्ब कर सकते हैं। इस योग की अशुभता से रोजगार प्राप्ति में व्यवधान, धन संग्रह में बाधा का सामना करना पड़ सकता है।

पंचम भाव और द्वादश भाव के स्वामी शुक्र हैं। शुक्र पंचमेश व द्वादशेश होकर आपके वैवाहिक सुखों में कमी का कारण बन सकता है। इसके अतिरिक्त शुक्र व्यय, हानि, दंड व अलगाव दे सकता है।

सूर्य का अष्टम भाव में होना, सन्तान और शिक्षा क्षेत्र को बाधायुक्त बना रहा है। जीवन में अप्रत्याशित घटनाएं, सरकारी कार्यों में बाधाएं, सरकारी क्षेत्रों से पूर्ण सहयोग प्राप्त न होना, हृदय सम्बन्धी लम्बी अवधि के रोग, पुलिस और ससुराल पक्ष से संबंधों में मधुरता में कमी हो सकती है। सूर्य आपकी विद्वता में कमी कर रहा है, वाणी में कटुता का भाव कुछ अंश तक आ सकता है, धन-संचय में कमी, कुटुंब से मतभेद, अल्पकाल के लिए मिथ्याभाषी हो सकते हैं।

अष्टम भाव आयु, पुरातत्व और अन्वेषण का भाव है। आपकी यात्राओं में विध्वन बाधाएं दे सकता है। अष्टम भाव से बुध धन भाव को दृष्ट करता है। इससे धन संग्रह में कठिनाइयाँ आती हैं। बुध की यह स्थिति आपके छोटे भाई बहन को पिताधिक्य, तेज बुखार और दुर्बल देह का कारण बन सकती है। बुध की स्थिति अष्टम भाव में आपको बुद्धिबल से धन संग्रह की योग्यता दे रही है।

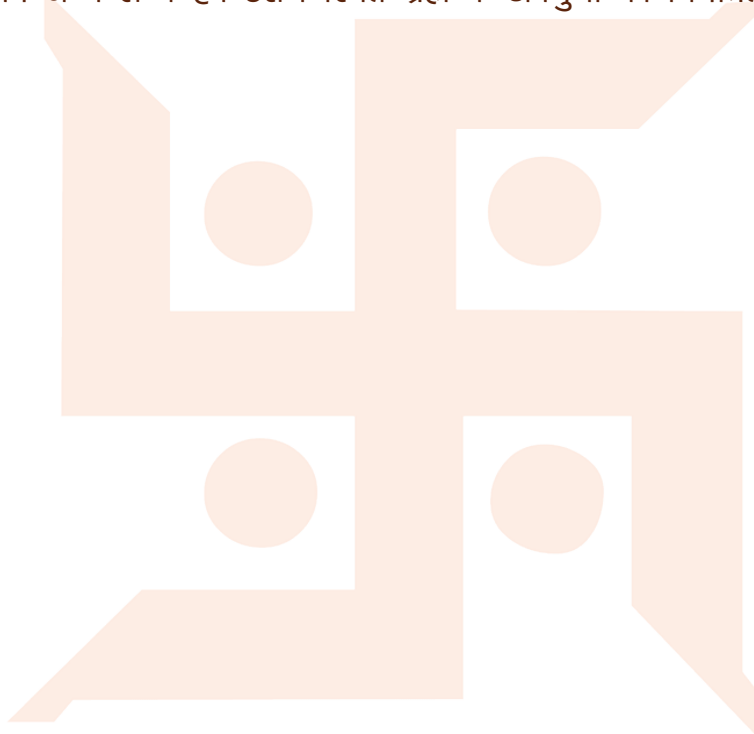
शुक्र अष्टम भाव में विवाह के उपरान्त भाग्योन्नति, सामान्य धनी, जीवन साथी द्वारा धनार्जन करने में सफलता प्राप्त करता है। शुक्र अष्टम भाव में प्रेम सम्बन्धों में बाधाएं, जन्म स्थान से दूर निवास, परस्त्रीरत बना सकता है।

आपको पैतृक सम्पत्ति से वंचित रहना पड़ सकता है, पिता से शत्रुता, तंत्र-मंत्र

ज्योतिष में रुचि, शत्रुनाशक, दीर्घरोगी, भाइयों व मित्रों से मतभेद, आर्थिक विपन्नता की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 1, 3, 4, 6, 7 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती है।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक है।



## स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। मिथुन लग्न में उत्पन्न जातक सामान्यतया विनम्र उदार एवं हास्य प्रवृत्ति के व्यक्ति होते हैं तथा बुद्धिमता का भाव उनके मुख पर स्पष्ट परिलक्षित होता है। वे स्वाभिमानी व्यक्ति होते हैं तथा जीवन में स्वपराक्रम बुद्धि एवं योग्यता से वांछित उन्नति करके समस्त भौतिक सुख संसाधनों को प्राप्त करते हैं तथा सुख पूर्वक उनका उपभोग करते हैं। उनके सभी कार्य सोचसमझकर सम्पन्न होते हैं तथा सरकार एवं उच्चाधिकारी वर्ग से उनके सम्पर्क बने रहते हैं। साहित्य संगीत एवं कला के प्रति इनकी रुचि रहती है तथा नवीन सिद्धांतों या मूल्यों का प्रतिपादन करने में समर्थ होते हैं। इसके अतिरिक्त गणित लेखन या संपादन के क्षेत्र में ये सफल रहते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक शांति एवं सन्तुष्टि भी बनी रहेगी। अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आप बुद्धिमता का परिचय देंगे तथा समाज में मान प्रतिष्ठा तथा यश अर्जित करेंगे। साथ ही जीवन में स्वपरिश्रम एवं पराक्रम से भौतिक सुख संसाधनों की प्राप्ति होगी तथा सुख पूर्वक इनका उपभोग करेंगे।

मित्रों के प्रति आपके मन में निष्ठा रहेगी। सरकारी कार्यों में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अपना योगदान प्रदान करेंगे। आपका व्यक्तित्व आकर्षक होगा तथा अन्य जन आपसे प्रभावित होंगे। साहित्य एवं संगीत में आप परिश्रम पूर्वक मान प्रतिष्ठा भी अर्जित करने में समर्थ हो सकेंगे तथा गणित या लेखन आदि में भी आपकी अभिरुचि होगी।

लग्न में बृहस्पति के प्रभाव से शारीरिक एवं मानसिक रूप से आप स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगे। आप एक विद्वान पुरुष होंगे तथा अपने विषय पर आपका पूर्ण आधिपत्य होगा जिससे सभी लोग आपसे प्रभावित होंगे। आपकी बुद्धि भी तीक्ष्ण होगी अपने सभी कार्य कलापों को बुद्धिमता पूर्वक सम्पन्न करेंगे। आप एक व्यवहार कुशल व्यक्ति होंगे तथा समयानुसार परिवर्तन करके अवसर का लाभ उठाने में तत्पर होंगे। आप में उदारता, परोपकार तथा विनम्रता का भाव भी विद्यमान होगा।

जीवन में इच्छित धनैश्वर्य अर्जित करने में आप सफल होंगे तथा अन्य भौतिक सुखों की भी समय समय पर प्राप्ति होती रहेगी जिसका आप प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगे। आपकी कुंडली में अचानक धन प्राप्ति के योग भी बनते हैं जिससे समय समय पर आपको लाभ होता रहेगा। लेखन या विज्ञान के क्षेत्र में आप इच्छित प्रतिष्ठा तथा प्रसिद्धि अर्जित कर सकते हैं।

आप एक आस्तिक पुरुष होंगे तथा धर्म के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी एवं समय समय पर धार्मिक कलापों को सम्पन्न करेंगे। पिता के प्रति भी आपकी पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी। अपने परिवार की आप उन्नति करेंगे तथा पिता के नाम से आपको प्रसिद्धि प्राप्त होगी। आप सदाचारी व्यक्ति होंगे तथा नैतिकता के अनुपालन में तत्पर रहेंगे।

## धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपकी जन्म कुंडली में द्वितीय भाव में कर्क राशि स्थित है जिसका स्वामी चन्द्रमा है। अतः इसके प्रभाव से आप भावुक प्रकृति के व्यक्ति होंगे तथा यदाकदा अधिक बोलने वाली प्रवृत्ति भी रहेगी। समाज में आप एक सम्माननीय व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे एवं आपको यथायोग्य सम्मान प्रदान करेंगे। आपकी वाणी भी मधुर होगी तथा अपने विचारों को आप स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करने में समर्थ रहेंगे। फलतः सभी लोग आपकी वाणी से प्रभावित होंगे।

परिवार में सुख शान्ति तथा समृद्धि उत्तम रहेगी तथा परिवार की शान्ति तथा खुशहाली के लिए आप नित्य प्रयत्नशील रहेंगे। साथ ही संतति से भी आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होता रहेगा। आपको सुन्दर तथा स्वादिष्ट भोजन करना रुचिकर लगेगा। विशेष रूप से मिष्ठान के आप प्रिय रहेंगे तथा रुचिपूर्वक इनका भक्षण करेंगे लेकिन इससे यदा कदा आपको स्वास्थ्य संबंधी परेशानी भी हो सकती है अतः इनकी अधिकता की उपेक्षा करनी चाहिए। साथ ही धार्मिक उत्सवों को भी आप समय समय पर परिवार में आयोजन करते रहेंगे। आप अपने विचारों की पुष्टि में हमेशा ठोस तर्कों को प्रस्तुत करेंगे जिसे सभी लोग स्वीकार करेंगे। इसके अतिरिक्त लकड़ी के व्यापार से आप लाभ अर्जित कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त पुत्रों का आपके प्रति विशेष स्नेह रहेगा तथा आपकी सेवा में वे सर्वदा तत्पर रहेंगे।

## शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्मसमय में चतुर्थ भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आप समस्त भौतिक सुखसंसाधनों एवं उपकरणों से युक्त रहेंगे तथा आनंदपूर्वक इनका उपभोग करेंगे। बुध के प्रभाव से आप में बुद्धिमता एवं व्यावहारिकता के भाव की प्रधानता होगी फलतः अपने इन्हीं गुणों से जीवन में ऐश्वर्य एवं वैभव की प्राप्ति करेंगे तथा समाज में आपका सम्माननीय स्तर रहेगा।

आप एक भाग्यशाली व्यक्ति होंगे तथा जीवन में चल एवं अचल संपत्ति को अवश्य प्राप्त करेंगे। संबंधीवर्ग से भी आपको न्यूनाधिक मात्रा में चल एवं अचल संपत्ति की प्राप्ति हो सकती है। आप स्वयं एक बुद्धिमान एवं योग्य व्यक्ति होंगे तथा अपने इन ही गुणों से भी वांछित मात्रा में चल एवं अचल सम्पत्ति अर्जित करके अपने ऐश्वर्य एवं समृद्धि में वृद्धि करेंगे।

जीवन में आपको उत्तम गृह की प्राप्ति होगी तथा आपका घर समस्त आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित होगा। घर की सफाई के प्रति आप पूर्ण रूपेण तत्पर होंगे तथा अन्य पारिवारिक जनों को भी इसके लिए प्रेरित करेंगे। आपका घर किसी अच्छी कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे तथा उनसे संबंधों में पर्याप्त मधुरता होगी। इसके अतिरिक्त युवावस्था में ही आपको उत्तम वाहन की प्राप्ति होगी तथा जीवन में विभिन्न प्रकार से आप वाहन सुख अर्जित करने में समर्थ होंगे।

आपकी माता बुद्धिमान शिक्षित एवं आदर्शवादी महिला होंगी तथा अपनी बुद्धिमता एवं व्यावहारिकता से सभी पारिवारिक जनों को अपनी ओर से सन्तुष्ट रखेंगी। सभी लोग उनका सम्मान एवं आज्ञा का पालन करेंगे। आपके प्रति उनके मन में विशिष्ट स्नेह एवं वात्सल्य की भावना होगी तथा अवसरानुकूल आपको आर्थिक एवं नैतिक सहयोग प्रदान करती रहेंगी। आपका भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव होगा एवं सुख-दुख में उन्हें पूर्ण रूप से सहयोग प्रदान करेंगे जिससे आपसी संबंधों में मधुरता रहेगी।

आप प्रारंभ से ही बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा अध्ययन के प्रति आपकी पूर्ण रुचि होगी एवं प्रारंभिक कक्षाओं से ही अच्छे अंक अर्जित करेंगे। अतः स्नातक परीक्षा आप अच्छे अंकों से उत्तीर्ण करेंगे तथा अपने उज्ज्वल भविष्य का मार्ग प्रशस्त करेंगे। इससे आपके आत्मविश्वास के भाव में वृद्धि होगी तथा अन्य संबंधियों एवं मित्रों से उचित सम्मान एवं प्रोत्साहन मिलेगा जिससे कार्य क्षेत्र में आप आशातीत उन्नति प्राप्त करेंगे।

## प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्मसमय में पंचमभाव में तुला राशि उदित हो रही थी। जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके शुभ प्रभाव से आप तीव्र बुद्धि के स्वामी होंगे तथा अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को बुद्धिमत्ता से सम्पन्न करेंगे। इससे अन्य लोग आपसे प्रभावित होंगे साथ ही कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान आप अपनी बुद्धि से करने में समर्थ होंगे। वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्मशास्त्र में भी आपकी रुचि होगी तथा इन ग्रंथों का अध्ययन करके वांछित मात्रा में ज्ञान अर्जित करेंगे। बुध के प्रभाव से साहित्य या कविता लेखन, गणित एवं ज्योतिष शास्त्र का ज्ञान भी आपको होगा तथा इस क्षेत्र में कोई महत्वपूर्ण उपलब्धि भी अर्जित कर सकते हैं जिससे समाज में आपके प्रभाव में वृद्धि होगी तथा एक विद्वान के रूप में आपकी प्रतिष्ठा होगी।

शुक्र की राशि की पंचमभाव में स्थिति के प्रभाव से प्रेम प्रसंगों में भी आपकी रुचि होगी परंतु आपका प्रेम आदर्शवाद एवं मर्यादा की सीमा में होगा तथा इसको आप केवल मनोरंजन या समय व्यतीत करने का समाधान नहीं मानेंगे। अतः आपका प्रेम प्रसंग विवाह के रूप में भी परिवर्तित हो सकता है जिससे आपका जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

जीवन में आपको यथोचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा संतति में कन्याओं की संख्या पुत्र से अधिक होगी लेकिन सभी बच्चे बुद्धिमान एवं गुणवान होंगे तथा अपनी योग्यता एवं परिश्रम से जीवन में उन्नति एवं सफलता के मार्ग पर अग्रसर होंगे। माता पिता के वे आज्ञाकारी होंगे तथा समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यों को माता पिता की सलाह से ही सम्पन्न करेंगे जिससे परस्पर सद्भाव बना रहेगा। पिता की अपेक्षा माता के प्रति उनमें विशेष लगाव होगा तथा अपनी व्यक्तिगत समस्या का समाधान माता से ही करवाना अधिक पसंद करेंगे लेकिन मान सम्मान एवं श्रद्धा का भाव माता पिता के प्रति समान रूप से रहेगा।

शिक्षा के क्षेत्र में आपके बच्चे आशातीत उन्नति करेंगे तथा अच्छे अंको से अपनी परिक्षाओं को उत्तीर्ण करके उज्ज्वल भविष्य का निर्माण करेंगे। वे उच्च पदों पर भी नियुक्त हो सकते हैं। इसके वे स्वभाव से विनम्र एवं व्यवहार कुशल होंगे तथा अन्य सामाजिक जन भी उनसे प्रसन्न तथा प्रभावित होंगे जिससे आपके सम्मान एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। अपने बच्चों पर आपको गौरव होगा तथा वे भी वृद्धावस्था में आपकी श्रद्धा पूर्वक सेवा करेंगे तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। अतः आप एक सौभाग्यशाली व्यक्ति होंगे।

## परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है तथा केतु भी सप्तम भाव को प्रभावित कर रहा है। सामान्यतया धनु राशि की सप्तम भाव में स्थिति के प्रभाव से जातक का सहयोगी पुष्ट शरीर वाला धनवान एवं कार्य कुशल होता है लेकिन केतु के प्रभाव से वह तेजस्वी पराक्रमी साहसी एवं असहिष्णुता के भाव से युक्त रहता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी बुद्धिमान तेजस्वी एवं साहसी महिला होंगी तथा साहस एवं पराक्रम से अपने कार्यों को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगी। साथ ही सांसारिक कार्य कलापों को सम्पन्न करने में वह निपुण होंगी। उच्चस्थ केतु के प्रभाव से उनमें स्वाभिमान के भाव की प्रबलता एवं सहिष्णुता के भाव की न्यूनता होगी परन्तु समाज एवं परिवार के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करेंगी।

आपकी पत्नी लालिमा युक्त गौरवर्ण की सुंदर महिला होंगी तथा उनका कद भी मध्यम रहेगा। शारीरिक दृष्टि से वह पुष्ट होंगी तथा अन्य अंग प्रत्यंग भी सुडौलता से युक्त रहेंगे जिससे उनके सौन्दर्य में वृद्धि होगी तथा व्यक्तित्व भी आकर्षक बना रहेगा। साहित्य एवं कला के प्रति उनकी रुचि रहेगी एवं उच्च कोटि के साहित्य का अध्ययन करना श्रेय कर समझेंगी।

सप्तम भाव में केतु के प्रभाव से यद्यपि विवाह में अल्प विलम्ब होगा लेकिन तुला राशि में स्थिति होने के कारण प्रक्रिया आसानी से सम्पन्न हो जाएगी। आपका विवाह विज्ञापन के माध्यम से होगा अथवा बन्धु भी इस कार्य में अपना सहयोग प्रदान करेंगे उच्चस्थ केतु के प्रभाव से आपका वैवाहिक जीवन सुखी रहेगा तथा आपस में एक दूसरे के प्रति समर्पण एवं प्रेम की भावना रखेंगे तथा आपसी सहमति से ही सांसारिक कार्य कलापों को पूर्ण करेंगे। इससे आपसी संबंधों में विश्वसनीयता तथा मधुरता रहेगी।

उच्चस्थ केतु के प्रभाव से आपका ससुराल किसी समृद्ध एवं प्रभावशाली परिवार से होगा तथा विवाह में आपको वांछित दहेज या धन सम्पत्ति की प्राप्ति होने की पूर्ण संभावना रहेगी। विवाह के बाद भी उनसे समय समय पर नैतिक तथा अन्य सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी सास ससुर से आपके सामान्यतया अच्छे संबंध रहेंगे एवं उनसे यथोचित सम्मान एवं स्नेह की प्राप्ति होगी साथ ही आप भी दोनों को वांछित सम्मान प्रदान करेंगे।

सामान्यतया सप्तम भाव केतु के प्रभाव से पत्नी के सास ससुर से अच्छे संबंध नहीं रहते परन्तु यहां केतु उच्च राशि में है। अतः सास ससुर की वह श्रद्धा पूर्वक सेवा करेंगी एवं उन्हें अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं देंगी। साथ ही ननद एवं देवरों को भी वह अपने सद्व्यवहार से प्रसन्न रखेंगी तथा वे भी उनको वांछित सम्मान एवं सहयोग प्रदान करेंगे जिससे परिवार में सुख शांति बनी रहेगी।

व्यापार में साझेदारी के लिए स्थिति सामान्यतया अनुकूल रहेगी तथा उच्चस्थ केतु

के प्रभाव से आपको लाभ एवं उन्नति मिलेगी। अतः उचित व्यक्ति के सम्पर्क में लाभ होगा एवं आपस में विश्वसनीयता भी बनी रहेगी।



## व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशम भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। साथ ही मंगल भी दशम भाव में स्थित है। मीन राशि जलतत्व तथा मंगल अग्नि तत्व ग्रह होने के कारण आपका कार्य बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगा। साथ ही जलतत्व के प्रभाव से इसमें समय समय पर अनुकूल परिवर्तन भी करते रहेंगे जिससे आपको प्रचुर मात्रा में लाभ होगा। कार्य क्षेत्र में उन्नति में गतिशीलता बनी रहेगी जिससे मानसिक रूप से सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

आजीविका की दृष्टि से आपके लिए डाक्टर, इंजीनियर, पुलिस, सेना, विद्युत एवं ऊर्जा विभाग विद्युत फैक्टरी, होटल कर्मचारी या अग्नि से संबंधित विभाग तथा अन्य पराक्रमी क्षेत्र शुभ एवं अनुकूल रहेंगे। इन क्षेत्रों या विभागों में कार्यरत होने से आपको यथोचित समय पर वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा उच्चपद पर पहुँचने में आप समर्थ होंगे। साथ ही किसी भी प्रकार से अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का भी सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः आपको चाहिए कि अपने उज्ज्वल भविष्य के लिए उपरोक्त क्षेत्रों या विभागों में ही अपने कार्यक्षेत्र का चयन करें।

व्यापार के क्षेत्र में आप शस्त्रों का व्यापार, विद्युत उपकरण, इंजीनियरिंग उपकरण दवाइयों का व्यापार, रासायनिक पदार्थ, होटल एवं जमीन जायदाद संबंधी क्रय विक्रय आपके लिए शुभ एवं अनुकूल रहेंगे। इन क्षेत्रों में व्यापार करने से आपको वांछित लाभ की प्राप्ति होगी तथा उन्नति के शिखर पर पहुँचने में आप सफल रहेंगे तथा मानसिक सन्तुष्टि भी बनी रहेगी।

दशमभाव में दिग्वली मंगल की मित्रराशि में स्थिति के प्रभाव से जीवन में आपको विशिष्ट मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। साथ ही सौभाग्यवश यश एवं प्रसिद्धि भी समाज में व्याप्त होगी परन्तु नैसर्गिक पापी ग्रह मंगल की स्थिति के प्रभाव से यह किंचित विलम्ब एवं व्यवधानों के उपरांत प्राप्त होगी। अतः इससे आपको विचलित नहीं होना चाहिए तथा परिश्रम तथा बुद्धिमतापर्वक अपने कार्यकलापों को करने में तत्पर रहना चाहिए।

आपके पिता तेजस्वी पराक्रमी एवं बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा। साथ ही समाज में सभी लोग उनके उत्तम कार्य कलापों से प्रभावित होंगे तथा उन्हें वांछित आदर एवं सम्मान प्रदान करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा वात्सल्य की भावना रहेगी तथा आपकी शिक्षा दीक्षा का समुचित प्रबंध करेंगे। साथ ही आपके कार्य क्षेत्र में उन्नति तथा स्थायित्व में उनका विशेष योगदान रहेगा एवं पिता के प्रभाव से आपको कार्यक्षेत्र में वांछित सफलता की प्राप्ति होगी। आपका भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान तथा श्रद्धा का भाव रहेगा तथा उनकी आज्ञा का पालन करने में तत्पर होंगे परंतु यदा कदा वैचारिक तथा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न हो सकते हैं जिससे यदा कदा संबंधों में कटुता का आभास होगा परन्तु यह क्षणिक होगा तथा सामान्यतया संबंधों में मधुरता बनी रहेगी।

## वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि दशम भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु नवम भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशिमें अष्टम भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु लग्न स्थान में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमेंद्वितीय भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशिमें तृतीय भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

### व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष बहुत उत्तमरहेगा। वर्षारम्भ में सप्तम भाव पर गुरु एवं शनिग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप व्यवसाय व कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगे जिससे आपकीआय में वृद्धि होगी। लग्न स्थान का गुरु नवीन विचार धारा नयी योजनाओं को जन्म देगा जिसका उचित लाभ उठा कर आप अपने नयेव्यापार को और सुदृढ़ बना सकते हैंऔरकम समय में उत्तम सफलता प्राप्त कर सकते हैं। साझेदारी या शेयर बजार में आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

02 जून के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी। आपको वरिष्ठ लोगों या बड़े अधिकारियों का सहयोग प्राप्त होगाजिससे आप मानसिक रूप से संतुष्ट होकर प्रसन्नता पूर्वक अपना कार्य करेंगे।

### धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम में वृद्धि होगी जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। धन संचय करने में आपकी पत्नी की अहम भूमिका होगी। 02 जून के बाद आपको रत्नाभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। आपको रुके हुए पैसे मिल सकते हैं। इस वर्ष आपके परिवार में मांगलिक कार्य होंगे जिसमें आप खुले होथों से खर्च करेंगे। निवेश में उत्तम फल मिलने की सम्भावना है।

31 अक्टूबर के बाद गुरु ग्रह का गोचर तृतीय स्थान में होगा। उस समय सामाजिक व धार्मिक कार्यों पर आपका पैसा खर्च हो सकता है।

### घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में सप्तम भाव पर गुरु एवं शनिग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपकी पत्नी के साथ आपके सम्बन्ध मधुर होंगे। आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी। जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। यदि आप विवाह के योग्य है तो विवाह हो सकता है।

02 जूनके बाद परिवार में किसी सदस्य की बढ़ोत्तरी हो सकती है। आपके ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध बहुत अच्छा रहेगा। पिताजी के साथ आपके संबंध मधुर होंगे। 31 अक्टूबर के बाद आप सामाजिक गतिविधियों में बढ़-चढ़ के भाग लेंगे।

### संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि से आप के बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। वह अपने भाग्य के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। नवविवाहित व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का उपयुक्त समय है। यदि आपकी सन्तान विवाह के योग्य है तो उसका विवाह भी हो सकता है।

आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय अनुकूल है। उसको अपने कार्य क्षेत्र में अच्छी सफलता प्राप्त होगी। इस वर्ष आप के बच्चे अच्छे काम करेंगे। आप अपने बच्चों पर गर्व करेंगे।

### स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। आपके मन में हमेशा सकारात्मक विचार आएंगे जिससे आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट रहेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आप खान-पान पर विशेष ध्यान देंगे एवं अपनी दिनचर्या भी सही रखेंगे। यदि मौसम जनित कोई बीमारी होती है तो शीघ्र ही आप अच्छे हो जाएंगे।

25 नवम्बर के बाद राहु ग्रह का गोचर अष्टम स्थान में हो रहा है। उस समय अचानक आपका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। अतः वर्षान्त में अपने स्वास्थ्य पर ध्यान देना अधिक जरूरी है।

### करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष आपके लिए प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से सामान्यतः अनुकूल रहेगा। यदि उच्च शिक्षा हेतु उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो आपके लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल है।

पंचम स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा है। 02 जून के बाद प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता प्राप्त होगी। जिन जातको की नौकरी अभी तक नहीं लगी है, 02 जून के बाद उन लोगों को नौकरी मिल सकती है।

### यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्राएं होंगी।

द्वादश स्थान पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से यात्राओं के प्रबल योग बन रहे हैं। 02 जून के बाद आप जलीय क्षेत्रों की यात्रा करेंगे और 31 अक्टूबर के बाद आपकी

छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी।

### धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। नवम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। आप गुरु मन्त्र लेकर साधना कर सकते हैं। दान पुण्य करने में आप सबसे आगे रहेंगे। 02 जून के बाद मन्त्र सिद्ध व गुप्त विद्याओं की ओर आपका रुझान बढ़ेगा।

- स्फटिक श्रीयन्त्र अपने घर में स्थापित कर उसके समने नित्य घी का दीपक जलाएं।
- अपने मन को केन्द्रित करने के लिए ध्यान करें एवं नित्य प्रणायाम करें।



## वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि दशम भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं दशम भाव में आजाएंगे। मकर राशि का राहु इस वर्ष अष्टम भाव में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं तृतीय भाव में गोचर करेंगे, और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

### व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत बढ़िया रहेगा। दशम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी। आप अपनी कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर अपने कार्य क्षेत्र में अच्छा सफलता प्राप्त करेंगे। बड़े अधिकारी व वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। अष्टमस्थ राहु के प्रभाव से कुछ गुप्त शत्रु आपके कार्यों में रुकावट उत्पन्न करने की कोशिश कर सकते हैं। आप अपने विवेक से उन पर भी विजय प्राप्त कर लेंगे।

26 जून के बाद एकादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके आय के स्रोत में वृद्धि होगी। व्यापारिक व्यक्तियों को इस समय के अंतराल में अच्छा लाभ होगा। आपको मित्रों का भी भरपूर सहयोग मिलेगा। यदि आप अपने भाई के साथ कार्य कर रहे हैं तो बहुत अच्छा उन्नति करेंगे। 26 नवम्बर के बाद भूमि संबंधित कार्य करने वाले व्यापारियों के लिए समय अच्छा रहेगा।

### धन संपत्ति

वर्ष के पूर्वार्द्ध में द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आर्थिक संपन्नता बनी रहेगी। रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। व्यापारिक अनुकूलता से आपकी आर्थिक स्थिति में भी सुधार होगा। इस समय के अंतराल में आप इच्छित निवेश करेंगे। अष्टमस्थ राहु के कारण आपके कुछ अनावश्यक खर्च भी हो सकते हैं।

26 जून के बाद एकादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके धनागम के स्रोत में वृद्धि होगी। कर्ज इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में आपके भाईयों का अहम सहयोग होगा। मांगलिक कार्यों में भी आपके पैसे खर्च हो सकते हैं। 26 नवम्बर के बाद आपको भूमि, भवन एवं वाहन इत्यादि का भी सुख प्राप्त हो सकता है।

### घर-परिवार, समाज

वर्ष का पूर्वार्द्ध पारिवारिक रूपसे अच्छा रहेगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके

परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। परिवार में एक-दूसरे के प्रति समर्पण की भावना बनी रहेगी। परिवार में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। भाइयों का सहयोग मिलता रहेगा। अष्टम स्थान का राहु आपके ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध खराब कर सकता है।

26 जून के बाद आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे। समाज में आपका अपना एक अलग व्यक्तित्व होगा। पत्नी के साथ आपके संबंध मधुर होंगे। 26 नवम्बर के बाद चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा।

### संतान

संतान के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। गर्भाधान के लिए समय अच्छा चल रहा है।

26 जून से आपके दूसरे बच्चे के लिए समय शुभ हो रहा है। यदि आप का दूसरा बच्चा विवाह के योग्य है तो उसका विवाह हो जाएगा। इस समयान्तराल में आपके बच्चों के साथ आपका भावनात्मक लगाव बढ़ेगा।

### स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध बढ़िया रहेगा। आपकी शारीरिक उर्जा व कार्य क्षमता में वृद्धि होगी। पूर्ण रूप से शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। शारीरिक अनुकूलता बनाये रखने के लिए आप संतुलित आहार एवं नियमित व्यायाम करते रहें। शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करें जिससे आपके अंदर अच्छे विचार आएंगे और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे।

अष्टमस्थ राहु के प्रभाव से आप कभी कभी छोटी-मोटी बीमारियों के कारण परेशान हो सकते हैं। परन्तु गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आप जल्दी अच्छे हो जाएंगे। 26 नवम्बर से आपका स्वास्थ्य बहुत अच्छा रहेगा।

### करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने कारण आपको प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिल सकती है। कुछ अनुभवी व्यक्तियों से मिलकर आप अपनी कार्यशैली में सुधार लाएंगे। सरकारी अफसरों और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। विद्यार्थियों के लिए यह समय शुभ रहेगा।

26 जून के बाद तकनीकी शिक्षा या व्यापार के लिए समय अच्छा हो रहा है। शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलने की संभावना बन रही है।

## यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में कोई विशेष यात्रा का योग नहीं बन रहा है। परन्तु 26 जून के बाद तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकी छोटी-मोटी यात्राओं के साथ-साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। धार्मिक यात्रा के लिए भी समय काफी अच्छा है।

26 नवम्बर के बाद आप परिवार के साथ अपनी जन्मभूमि की यात्रा करेंगे। पर्यटन स्थल व दार्शनिक स्थलों की यात्रा का आनन्द प्राप्त करेंगे। यात्रा करते समय सावधान रहें क्योंकि अष्टम स्थान का राहु अचानक दुर्घटना दे सकता है।

## धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष का पूर्वार्द्ध धार्मिक कार्य के लिए बढ़िया रहेगा। ईश्वर के प्रति आपके मन में अटूट विश्वास बना रहेगा। 26 जून के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप कोई विशेष पूजा-पाठ यज्ञ, अनुष्ठान संपन्न करेंगे। धार्मिक कार्य, गरीबों को दान एवं तीर्थ यात्रा कर अत्यधिक पुण्यार्जन करेंगे, जिससे आपको मानसिक शान्ति एवं आत्मिक सुख की अनुभूति होगी। 26 नवम्बर के बाद अपने परिवार में सुख, शान्ति या समृद्धि प्राप्ति के लिए हवन व कोई धार्मिक कार्य भी संपन्न करेंगे।

- स्फटिक श्रीयन्त्र अपने घर में स्थापित करें एवं उसके सामने नित्य दीपक जलाएं।
- शनिवार के दिन काले कुत्तों को रोटी में गुड़ डालकर खिलाएं या राहु ग्रह का ऊँ भ्रां भ्रौं सं राहवे नमः मन्त्र का जाप करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीस का पाठ करें।

## वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि दशम भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरुआत में मकर राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु चतुर्थ भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

### व्यवसाय

वर्ष का प्रारंभ व्यवसाय के लिए उत्तम रहेगा। दशमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी। मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण भी हो सकता है। अष्टमस्थ राहु के कारण आपके कार्यों में कुछ विरोधी या गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं।

वर्षारम्भ में उन्नति के लिए नये नये तरीके अपनाएं। एकादशस्थ शनि के प्रभाव से आप अपने व्यापार में उन्नति करेंगे। प्रोपर्टी डीलर या कमीशन पर कार्य करने वाले व्यक्तियों की उन्नति होगी। सप्तम स्थान का राहु साझेदारी में कार्य करने वालों के लिए अच्छा नहीं है।

### धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के साथ होगा। चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से भूमि, भवन व वाहन इत्यादि का सुख मिलेगा। भौतिक सुख-सुविधाओं पर आप अधिक खर्च करेंगे। फरवरी के बाद आपके आय के स्रोतों में वृद्धि होगी। निवेश के लिए समय काफी अच्छा चल रहा है परन्तु अष्टम स्थान का राहु कभी कभी अनावश्यक खर्च करा सकता है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपकी आर्थिक उन्नति में आपके भाईयों एवं परिवार के लोगों का पूर्ण सहयोग होगा। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे जिसमें आप खुले हाथों से व्यय करेंगे। आपका पत्नी के स्वास्थ्य पर भी पैसा खर्च हो सकता है। इस अवधि में वसीयत इत्यादि मिलने की भी संभावनाएं बन रही हैं।

### घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। चतुर्थ स्थान का गुरु पारिवारिक सुख प्रदान करने वाला है। पूरे परिवार में सुख शांति का वातावरण बना रहेगा। मांगलिक कार्य संपन्न होने के योग बन रहे हैं। परिवार में कोई मुकद्दमा चल रहा हो तो सफलता प्राप्त हो सकती है।

28 फरवरी के बाद गुरु के तृतीय भाव में गोचर करने से आपकी सामाजिक मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। परिवार के कुछ लोगों के बर्ताव से आपकी भावनाओं को चोट पहुंच सकती है। अतः अच्छा यही है कि विपरीत परिस्थितियों के लिए अपने अंदर प्रतिरोधात्मक शक्ति

विकसित करें। 24 जुलाई के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। सप्तमस्थ राहु आपकी पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकते हैं।

### संतान

यह वर्ष संतान की तरक्की के योग लेकर आ रहा है। शिक्षा के लिए समय बहुत अनुकूल हो रहा है। परिवार की उन्नति के लिए आपकी संतान नवीन योजनाएं बनाएं।

संतान के साथ प्रेम व समन्वय में मधुरता आएगी। घर का वातावरण उत्तम होने के साथ-साथ सामाजिक सम्मान बढ़ेगा। 24 जुलाई के बाद का समय आपके लिए शुभ है।

### स्वास्थ्य

वर्षारम्भ में स्वास्थ्य बहुत अनुकूल नहीं रहेगा। अष्टमस्थ राहु के प्रभाव से आप समय पर अपना खान-पान नहीं कर पाएंगे जिसके परिणामस्वरूप स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है। स्वास्थ्य संबंधी किसी प्रकार की लापरवाही न करें अन्यथा स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है।

तनाव कम करने के लिए इस अवधि में आप अपने मन को एकाग्र कर योग क्रियाएं कर सकते हैं। इससे उत्साह का संचार होगा और आप अपने को स्वस्थ बनाए रखने में कामयाब रहेंगे।

### करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ करियर के लिए उत्तम रहेगा। कुछ अनुभवी व्यक्तियों से मिलकर आप अपनी कार्यशैली में सुधार करेंगे। सरकारी अफसरों और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा।

कार्यस्थल पर होने वाली अनावश्यक राजनीति व गुप्त शत्रुओं से सावधान रहें। अपने अंदर में की भावना ना आने दें। 23 फरवरी के बाद समय प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता के लिए विशेष शुभ है। बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलने की संभावना बन रही है।

### यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में आपके माता-पिता को धार्मिक स्थलों की यात्रा करने का अवसर प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए स्थानान्तरण के प्रबल योग बने हुए हैं। यह परिवर्तन आपके हित में होगा। 28 फरवरी के बाद आपकी लम्बी यात्राएं होंगी।

24 जुलाई के बाद आप अपनी जन्मभूमि की यात्रा करेंगे या अपने परिवार के साथ किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा करेंगे।

### धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष यदि किसी तीर्थयात्रा या कोई धार्मिक कार्य करने जा रहे हैं तो

उसको योजनाबद्ध तरीके से ही संपन्न करें अन्यथा धार्मिक कार्य में असफलता या पूजादि कार्यों में व्यवधान आने की आशा है। 24 जुलाई के बाद पूरे परिवार के साथ कोई विशेष धार्मिक आयोजन जैसे- भगवती जागरण इत्यादि कर सकते हैं।

- भगवान गणेश व माँ दुर्गा की आराधना करें।
- गौ सेवा करें व अपने भोजन का पहला भाग गाय को खिलाएं।
- राहु मन्त्र का जाप करें या राहु की वस्तुओं का दान करें।



## वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि एकादश भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं एकादश भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु सप्तम भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु पंचम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गशीर्ष होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं पंचम भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

### व्यवसाय

वर्षारम्भ में ही आप कोई नया व्यापार शुरू करेंगे जिसमें आपको अच्छा लाभ मिलेगा। उच्चअधिकारियों या वरिष्ठ लोगों की सहयोग मिलती रहेगी। साथ ही किसी बड़ी कंपनी के साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। 29 मार्च से आपके कार्य व्यवसाय में कुछ व्यवधान आ सकता है। शत्रु व विरोधियों द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती है।

05 अक्टूबर के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। आप अपनी कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर व्यावसायिक जीवन में समस्याओं का समाधान निकाल लेंगे। व्यापारिक व्यक्ति अपने कर्मचारियों व नौकरों पर विशेष ध्यान देना चाहिए नहीं तो सप्तमस्थ राहु के कारण अचानक वे आपका साथ छोड़ सकते हैं। साझेदारी में काम करने वाले व्यक्ति अपने साझेदार से असंतुष्ट रहेंगे।

### धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम होगा। आय भाव पर गुरु एवं शनि ग्रह का संयुक्त गोचरीय प्रभाव धनागम के स्रोतों में वृद्धि करेगा। नये व्यापार से भी शीघ्र लाभ होने के योग हैं। साथ ही फंसे हुए धन या रुके हुए धन की प्राप्ति हो सकती है। 29 मार्च से पारिवारिक सदस्यों के स्वास्थ्य पर धन का व्यय होगा जिससे आर्थिक उन्नति रुक सकती है। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें।

05 अक्टूबर के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। आपके आय के स्रोतों में वृद्धि होगी जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। मांगलिक कार्य व पुत्रादि के विवाह के अवसर पर भी धन का व्यय हो सकता है। सट्टा, लॉटरी, या शेयर इत्यादि से जुड़े व्यक्तियों को अच्छा लाभ मिलेगा।

### घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक रूप से अच्छा नहीं रहेगा। चतुर्थस्थ मंगल के प्रभाव से आपका पारिवारिक माहौल अनुकूल नहीं रहेगा। परिवार से जुड़े हर मामलों में बहुत सावधानी

बरतने की आवश्यकता है। आपकी धर्मपत्नी का स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है। मातुल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध खराब हो सकता है। 29 मार्च के बाद आपके परिवार में कुछ विषम परिस्थितियां उत्पन्न होंगी। अतः अच्छा यही होगा कि विपरीत परिस्थितियों से लड़ने के लिए आप अपने अंदर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करें।

25 अगस्त से आपका घरेलम वातावरण अनुकूल होना शुरू हो जाएगा। गर्भाधान का शुभ समय चल रहा है। परिवार में सदस्यों की बढ़ोत्तरी होगी। 05 अक्टूबर के बाद आपके प्रेम संबंधों में मधुरता आएगी। आपको भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा।

### संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। गर्भ धारण का अच्छा समय है। आपके बच्चों की उन्नति होगी। वह अपने बुद्धि एवं विवेक के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे परन्तु 29 मार्च से 25 अगस्त तक समय प्रभावित रहेगा। इस समय के अंतराल में आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। दूसरी संतान के लिए समय सामान्य रहेगा।

05 अक्टूबर के बाद पंचम स्थान पर गुरु एवं शनि के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से बच्चों के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति होने के योग बन रहे हैं। उनके पराक्रम में वृद्धि होगी। आपके बच्चे कुछ ऐसे काम करेंगे जिससे आपका यश बढ़ेगा।

### स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। आप शुद्ध शाकाहारी भोजन करेंगे।

29 मार्च के बाद स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। गुरु का गोचर प्रतिकूल होने के कारण मौसमजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। स्वास्थ्य में उतार चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। 25 अगस्त के बाद शारीरिक आरोग्यता अनुकूल रखने का पूर्ण प्रयास करेंगे फिर चोट चपेट या दुर्घटना की स्थिति बन रही है। अतः कोई भी कार्य करते समय एकाग्रता बहुत जरूरी है।

### करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ श्रेष्ठतम रहेगा। शिक्षा के क्षेत्र में कुछ उपलब्धी प्राप्त करेंगे। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए भी समय उत्तम है। करियर में भी अच्छी सफलता मिलेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थी सफल होंगे परन्तु 29 मार्च के बाद करियर व प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। व्यवसायिक रूप से भी समय अच्छा नहीं रहेगा।

05 अक्टूबर के बाद बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलेगी। रोजगार के नये अवसर पैदा होंगे। आप व्यापार में सफलता और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे।

### यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह परिवर्तन आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा। 08 अगस्त के बाद विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं।

यात्रा के दौरान छोटी-मोटी परेशानियों का भी सामना करना पड़ सकता है। वर्ष के उत्तरार्द्ध में नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप तीर्थ यात्रा कर पुण्यार्जन करेंगे।

### धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान व मन्त्र जाप के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। समय-समय पर आप गरीबों की सहायता करेंगे। वर्षान्त में मन्त्र साधना भी कर सकते हैं।

- शनिवार के दिन काली वस्तु या काला कम्बल मजदूरों या गरीबों में दान करें।
- बुधवार या शनिवार के दिन चिड़ियों को दाना डालें।
- अपने माता-पिता की सेवा करें एवं अपने से बड़े लोगों का सम्मान करें।

## वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि एकादश भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु सप्तम भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं पंचम भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं छठे भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे

### व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए वर्ष का प्रारम्भ मिला-जुला रहेगा। 04 फरवरी से राहु एवं गुरु की युति आपके कार्यों में रुकावटें डाल सकती है। इस समय के अंतराल में आप कुछ परेशान हो सकते हैं परन्तु गुरु के गोचर के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। उस समय आप अपने व्यापार को एक अलग ही मुकाम पर ले जाएंगे। आप सफलता पूर्ण रूप से प्राप्त करेंगे आपकी आंतरिक क्षमता, इच्छा शक्ति, संतुलन और दृढ़ता से अपने काम को आगे ले जाएंगे। बड़ी-बड़ी योजनाएं और अवसर आपके द्वार पर दस्तक देंगे। केवल आपको पूर्ण विश्वास के साथ आगे बढ़ना है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होने के प्रबल संकेत दिख रहे हैं। आपके अन्दर संतुष्टि और जीत की भावना बना रहेगी।

23 सितम्बर के बाद व्यावसायिक जीवन में उतार-चढ़ाव का सामना करना पड़ सकता है आपका धैर्य ही आपको प्रगतिशील रहने के लिए प्रेरित करता रहेगा और आप हर समस्या का समाधान सूझ-बूझ से निकाल लेंगे।

### धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ आपके लिए थोड़ा चिंताजनक हो सकता है क्योंकि गुरु ग्रह का गोचर अप्रैल तक अच्छा नहीं है। मई से आपका समय काफी अच्छा हो रहा है। आप को कई लाभकारी अवसर मिलेंगे। आप अपनी समझ का सही उपयोग करेंगे आपकी राह में आने वाले हर अवसर का लाभ उठाने के लिए आपको सही और गलत की परख होगी।

सितम्बर के बाद गुरु ग्रह का गोचर फिर से प्रभावित हो रहा है। जोखिम भरे कार्यों में निवेश करने से बचें, किसी को उधार पैसा न दें और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

### घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ मिला-जुला रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगी। परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। यह बढ़ोत्तरी विवाह या जन्म के माध्यम से हो सकती है। आपके मातुल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध अच्छा नहीं रहेगा। संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी।

सामाजिक उन्नति के लिए भी समय बहुत अच्छा नहीं है। आपकी धर्मपत्नी का

स्वास्थ्य अचानक बिगड़ सकता है या उनके साथ आपका वैचारिक मदभेद हो सकता है। मई से समय कुछ अनुकूल हो रहा है। उस समय आपको बड़े भाईयों का सहयोग मिलेगा। आपके पिता के लिए यह समय काफी शुभ है।

### संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नहीं रहेगा। बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है जिसके कारण आप मानसिक रूप से चिंतित रह सकते हैं परन्तु अप्रैल के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके बच्चों की स्वास्थ्य संबंधित परेशानी कम होगी और शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। यदि उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा। गर्भाधान के लिए अच्छा समय चल रहा है। दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

23 सितम्बर के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। आपके बच्चों की उन्नति में व्यवधान आ सकता है अतः उनको मन को एकाग्र कर शिक्षा के प्रति विशेष ध्यान देना चाहिए। खान-पान पर विशेष ध्यान दें, नहीं तो स्वास्थ्य संबंधित परेशानी आ सकती है।

### स्वास्थ्य

वर्ष के प्रारम्भ से ही स्वास्थ्य संबंधित परेशानियां होती रहेंगी। षष्ठस्थ गुरु के प्रभाव से पेट संबंधित परेशानी हो सकती है। घी या तली हुई वस्तुओं का सेवन कम करें। अप्रैल के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके स्वास्थ्य में कुछ सुधार होगा। सकारात्मक ऊर्जा व रोग प्रतिरोधक शक्ति में वृद्धि होगी।

वर्षान्त में गुरु ग्रह गोचर फिर से प्रतिकूल होने के कारण आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान रह सकते हैं। स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए सुबह-सुबह व्यायाम या योगाभ्यास करना लाभप्रद रहेगा। शारीरिक व्याधि दूर करने के लिए तुला दान भी कर सकते हैं।

### करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। व्यापारिक व्यक्तियों के लिए व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी।

अप्रैल के बाद विद्यार्थियों के लिए समय काफी अच्छा हो रहा है। यदि आप विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो यह समय आपके लिए शुभ है।

### यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में कोई विशेष यात्रा का योग नहीं बन रहा है परन्तु गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। धार्मिक यात्रा का भी योग बन रहा है। यात्रा के दौरान किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

17 अप्रैल के बाद द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा भी होगी। इस यात्रा से आपको लाभ होगा।

### धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

मानसिक द्वंदता के कारण वर्षारम्भ में पूजा-पाठ कम ही कर पाएंगे। गुरु का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आपके सारे धार्मिक कार्य प्रभावित होंगे। 17 अप्रैल के बाद आप दान-पुण्य अधिक करेंगे धार्मिक कार्यों में आपकी रुचि बढ़ेगी। मन्त्र जप व साधना करेंगे साधु, संन्यासी एवं ईश्वर में आपकी निष्ठा एवं विश्वास बढ़ेगा।

- माता-पिता, गुरु, साधु, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- शनिवार के दिन काला कंबल गरीबों को दान करें एवं शनि मन्त्र का जाप करें।

